

Chapter 12

वाडमनःप्राणस्वरूपम्

2marks

प्रश्न 1.

एकपदेन उत्तरं लिखत

- (क) अन्नस्य कीदृशः भागः मनः?
- (ख) मथ्यमानस्य दहनः अणिष्ठः भागः किं भवति?
- (ग) मनः कीदृशं भवति?
- (घ) तेजोमयी का भवति?
- (ङ) पाठेऽस्मिन् आरुणिः कम् उपदिशति?
- (च) "वत्स! चिरञ्जीव"-इति कः वदति?
- (छ) अयं पाठः कस्मात् उपनिषदः संगृहीतः?

उत्तराणि :

- (क) अणिष्ठः।
- (ख) सर्पिः।
- (ग) अन्नमयम्।
- (घ) वाक्।
- (ङ) श्वेतकेतुम्।
- (च) आरुणिः।
- (छ) छान्दोग्योपनिषदः।

प्रश्न 2.

अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत
(अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए-)

- (क) श्वेतकेतुः सर्वप्रथमम् आरुणिं कस्य स्वरूपस्य विषये पृच्छति?
- (श्वेतकेतु सबसे पहले आरुणि से किसके स्वरूप के विषय में पूछता है?)

उत्तरम् :

श्वेतकेतुः सर्वप्रथमम् आरुणिं मनसः स्वरूपस्य विषये पृच्छति।
(श्वेतकेतु सबसे पहले आरुणि से मन के स्वरूप के विषय में पूछता है।)

(ख) आरुणिः प्राणस्वरूपं कथं निरूपयति?
(आरुणि प्राण का स्वरूप क्या बतलाते हैं?)

उत्तरम् :

आरुणिः निरूपयति यत् "आपोमयो लघुतमः रूपः भवति प्राणाः।"
(आरुणि वर्णन करते हैं कि "जलमय लघुतम रूप प्राण होता है।")

(ग) मानवानां चेतांसि कीदृशानि भवन्ति?
(मनुष्यों के मन किस प्रकार के होते हैं?)

उत्तरम् :

मानवानां चेतांसि अशितान्नानुरूपाणि भवन्ति।
(मनुष्यों के मन खाये गए अन्न के अनुरूप होते हैं।)

(घ) सर्पिः किं भवति? [घी (घृत) क्या होता है?]

उत्तरम् :

मथ्यमानस्य दनः योऽणुतमः यदुवंम् आयाति तत् सर्पिः भवति।
(मथे जाते हुए दही का जो सबसे लघुतम रूप ऊपर उठता है, वह घी होता है।)

(ङ) आरुणेः मतानुसारं मनः कीदृशं भवति?
(आरुणि के मतानुसार मन कैसा होता है?)

उत्तरम् :

आरुणेः मतानुसारं मनः अन्नमयं भवति।
(आरुणि के मतानुसार मन अन्नमय होता है।)

4marks

प्रश्न 3.

(अ) 'अ' स्तम्भस्य पदानि 'ब' स्तम्भेन दत्तैः पदैः सह यथायोग्यं योजयत -

अ ब

मनः - अन्नमयम्

प्राणः - तेजोमयी

वाक् - आपोमयः

उत्तरम् :

मनः - अन्नमयम्

प्राणः - आपोमयः

वाक् - तेजोमयी

(आ) अधोलिखितानां पदानां विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखत -

1. गरिष्ठः _____
2. अधः _____
3. एकवारम् _____
4. अनवधीतम् _____
5. किञ्चित् _____

उत्तरम् :

पद - विलोम पद

1. गरिष्ठः - अणिष्ठः
2. अधः - ऊर्ध्वः
3. एकवारम् - भूयोऽपि
4. अनवधीतम्। - अधीतम्
5. किञ्चित् - भूयः

प्रश्न 4.

उदाहरणमनुसृत्य निम्नलिखितेषु क्रियापदेषु 'तुमुन्' प्रत्ययं योजयित्वा पदनिर्माणं कुरुत -

यथा - प्रच्छ् + तुमुन् प्रष्टुम्

(क) श्रु + तुमुन्

(ख) वन्द + तुमुन्

(ग) पठ् + तुमुन्

- (घ) कृ + तुमुन्
 (ङ) वि + ज्ञा + तुमुन्
 (च) वि + आ + ख्या + तुमुन्
 उत्तरम् :
 (क) श्रु + तुमुन् - श्रोतुम्
 (ख) वन्द् + तुमुन् - वन्दितुम्
 (ग) पठ् + तुमुन् - पठितुम्
 (घ) कृ + तुमुन् - कर्तुम्
 (ङ) वि + ज्ञा + तुमुन् - विज्ञातुम्
 (च) वि + आ + ख्या + तुमुन् - व्याख्यातुम्

प्रश्न 5.

निर्देशानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत -

- (क) अहं किञ्चित् प्रष्टुम्। (इच्छ्-लट्लकारे)
 (ख) मनः अन्नमयं। (भू-लट्लकारे)
 (ग) सावधान। (श्रु-लोट्लकारे)
 (घ) तेजस्विनावधीतम्। (अस्-लोट्लकारे)
 (ङ) श्वेतकेतुः आरुणेः शिष्यः। (अस्-लङ्लकारे)

उत्तरम् :

- (क) अहं किञ्चित् प्रष्टुम् इच्छामि।
 (ख) मनः अन्नमयं भवति।
 (ग) सावधानं शृणु।
 (घ) तेजस्विनावधीतम् अस्तु।
 (ङ) श्वेतकेतुः आरुणेः शिष्यः आसीत्।

(अ) उदाहरणमनुसृत्य वाक्यानि रचयत -
 यथा - अहं स्वदेशं सेवितुम् इच्छामि।

- (क) उपदिशामि।
 (ख) प्रणमामि।
 (ग) आज्ञापयामि।
 (घ) पृच्छामि।
 (ङ) अवगच्छामि।

उत्तरम् :

- (क) अहं शिष्यं उपदिशामि।
- (ख) अहं गुरुं प्रणमामि।
- (ग) अहं सेवकं आज्ञापयामि।
- (घ) अहं गुरुं प्रश्नं पृच्छामि।
- (ङ) अहं मनसः स्वरूपं अवगच्छामि।

प्रश्न 6.

- (अ) सन्धिं कुरुत -
- (i) अशितस्य + अन्नस्य =
- (ii) इति + अपि + अवधार्यम् =
- (ii) का + इयम् =
- (iv) नौ + अधीतम् =
- (v) भवति + इति =

उत्तरम् :

- (i) अशितस्य + अन्नस्य
- (ii) इति + अपि + अवधार्यम्
- (iii) का + इयम्
- (iv) नौ + अधीतम्
- (v) भवति + इति

7marks

लघूत्तरात्मक प्रश्न :

(क) संस्कृत में प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

'वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्' इति पाठस्य आधारग्रन्थः कः?
('वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्' इस पाठ का आधार ग्रन्थ कौनसा है?)

उत्तर :

छान्दोग्योपनिषद्। ('छान्दोग्योपनिषद्'।)

प्रश्न 2.

मनः कः भवति?
(मन क्या होता है?)

उत्तर :

अशितस्यान्नस्य योऽणिष्ठः तन्मनः।
(खाये हुए अन्न का अत्यन्त लघु रूप मन होता है।)

प्रश्न 3.

प्राणः कः भवति?
(प्राण क्या होता है?)

उत्तर :

पीतानाम् अपां योऽणिष्ठः स प्राणः।
(पीये हुए जल का जो अत्यन्त लघु रूप है वह प्राण होता है।)

प्रश्न 4.

वाक् का भवति?
(वाक् क्या होती है?)

उत्तर :

अशितस्य तेजसा योऽणिष्ठः सा वाक् भवति।

(उपभोग किये गये तेज का जो सूक्ष्मतम रूप है वह वाक् होती है।)

प्रश्न 5.

सर्पिः किम् भवति? (घी क्या होता है?)

उत्तर :

मध्यमानस्य दधनः योऽणिमा, स ऊर्ध्वः समुदीषति, तत्सर्पिः भवति।

(मथे गए दही का जो सूक्ष्मतम रूप है, वह ऊपर उठता है तब वह घी होता है।)

प्रश्न 6.

आरुणिः उपदेशान्ते भूयोऽपि किं कर्तुमिच्छति?

(आरुणि उपदेश के अन्त में पुनः क्या करना चाहता है?)

उत्तर :

आरुणिः उपदेशान्ते भूयोऽपि श्वेतकेतुं विज्ञापयितुमिच्छति।

(आरुणि उपदेश के अन्त में पुनः श्वेतकेतु को बतलाना चाहता है।)

प्रश्न 7.

अन्नमयं किं भवति?

(अन्नमय क्या होता है?)

उत्तर :

अन्नमयं मनः भवति। (अन्नमय मन होता है।)

प्रश्न 8.

आपोमयो कः भवति?

(जलमय क्या होता है?)

उत्तर :

आपोमयो प्राणाः भवति।
(जलमय प्राण होते हैं।)

प्रश्न 9.

तेजोमयी का भवति?
(तेजमयी क्या होती है?)

उत्तर :

तेजोमयी वाक् भवति। (तेजमयी वाक् होती है।)

प्रश्न 10.

मानवस्य चित्तादिकं कीदृशं भवति?
(मानव का चित्त आदि कैसा होता है?)

उत्तर :

यादृशमन्नादिकं गृह्णाति मानवः तादृशमेव तस्य चित्तादिकं भवति।
(मानव जिस प्रकार का अन्न आदि ग्रहण करता है उसी प्रकार का उसका चित्त आदि होता है।)

प्रश्न 11.

किम् नौ अधीतम् अस्तु? (हम दोनों के द्वारा पढ़ा हुआ कैसा होवे?)

उत्तर :

तेजस्वि नौ अधीतम् अस्तु। (हम दोनों के द्वारा पठित ज्ञान तेजस्विता से युक्त हो।)

प्रश्न 12.

श्वेतकेतोः पितुः किनाम आसीत्?
(श्वेतकेतु के पिता का क्या नाम था?)

उत्तर :

श्वेतकेतोः पितुः नाम आरुणिः आसीत्।
(श्वेतकेतु के पिता का नाम आरुणि था।)

प्रश्न 13.

'वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्' पाठ कः कस्मै उपदेशं ददाति?
('वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्' पाठ में कौन किसको उपदेश देता है?)

उत्तर :

पाठेऽस्मिन् ऋषिः आरुणिः स्वपुत्राय श्वेतकेतवे उपदेशं ददाति।
(इस पाठ में ऋषि आरुणि अपने पुत्र श्वेतकेतु को उपदेश देते हैं।)

प्रश्न 14.

श्वेतकेतुः सर्वप्रथमं कस्मिन् विषये पृच्छति? (श्वेतकेतु सबसे पहले किस विषय में पूछता है?)

उत्तर :

श्वेतकेतुः सर्वप्रथमं मनसः विषये पृच्छति।
(श्वेतकेतु सबसे पहले मन के विषय में पूछता है।)

प्रश्न 15.

कीदृशस्य तेजसः अणिष्ठः वाक् भवति?
(किस प्रकार के तेज का लघुतम भाग वाणी होती है?)

उत्तर :

अशितस्य तेजसः अणिष्ठः वाक् भवति।
(उपभोग किये गये तेज का लघुतम भाग वाणी होती है।)

(ख) प्रश्न निर्माणम् :

प्रश्न 1.

रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

1. श्वेतकेतुः स्वपितरम् आरुणिं प्रश्नं पृच्छति।
2. आरुणिः श्वेतकेतोः जिज्ञासां शमयति।
3. अशितस्यान्नस्य योऽणिष्ठः तत् मनः।
4. पीतानाम् अपां योऽणिष्ठः स प्राणः।
5. अशितस्य तेजसः योऽणिष्ठः सा वाक्।
6. मनः अन्नमयं भवति।
7. आपोमयः प्राणः भवति।
8. वाक् तेजोमयी भवति।
9. भगवन् ! भूय एव मां विज्ञापयतु।
10. भवता घृतोत्पत्तिरहस्यं व्याख्यातम्।
11. अहं भूयोऽपि श्रोतुम् इच्छामि।
12. भगवन् ! वाचम् अपि विज्ञापयतु।
13. उपदेशान्ते भूयोऽपि त्वां विज्ञापयितुमिच्छामि।
14. एतत्सर्वं हृदयेन अवधारय।
15. तेजस्वि नौ अधीतम् अस्तु।

उत्तर :

प्रश्न निर्माणम्

1. श्वेतकेतुः कम् प्रश्नं पृच्छति?
2. आरुणिः कस्य जिज्ञासां शमयति?
3. कः मनः?
4. पीतानाम् अपां योऽणिष्ठः सः कः?
5. का वाक्?
6. कः अन्नमयं भवति?
7. आपोमयः कः भवति?
8. का तेजोमयी भवति?
9. भगवन् ! भूय एव कम् विज्ञापयतु?
10. भवता किम् व्याख्यातम्?

11. अहं भूयोऽपि किम् इच्छामि?
12. भगवन् काम् अपि विज्ञापयतु?
13. कदा भूयोऽपि त्वां विज्ञापयितुमिच्छामि?
14. एतत्सर्वं केन अवधारय?
15. तेजस्वि को अधीतम् अस्तु?

प्रश्न 1.

"भगवन् ! श्वेतकेतुरहं.

रिक्तस्थाने पूरणीयक्रियापदं किम्?

- (अ) वन्दे
- (ब) वन्दते
- (स) वन्दसे
- (द) वन्दामहे

उत्तर :

- (अ) वन्दे

प्रश्न 2.

"वत्स! चिरञ्जीव।"

रेखाङ्कितपदे प्रयुक्तसन्धेः नाम किम्?

- (अ) यण्
- (ब) दीर्घ
- (स) अनुस्वार
- (द) विसर्ग

उत्तर :

- (स) अनुस्वार

प्रश्न 3.

'भगवन् ! प्रष्टुम् इच्छामि किमिदं मनः?"

रेखांकितपदे प्रयुक्तप्रत्ययः कः?

(अ) तव्यत्

(ब) तुमुन्

(स) तमप्

(द) क्त

उत्तर :

(ब) तुमुन्

प्रश्न 4.

"भगवन्! केयं वाक्?

रेखाङ्कितपदस्य सन्धि-विच्छेदः भवति

(अ) के + यम्

(ब) को + यम्

(स) का + अयम्

(द) का + इयम्

उत्तर :

(द) का + इयम्

प्रश्न 5.

"भूय एवं मां विज्ञापयतु।"

रेखांकितपदे प्रयुक्तविभक्तिः वर्तते

(अ) द्वितीया

(ब) चतुर्थी

(स) षष्ठी

(द) सप्तमी

उत्तर :

(अ) द्वितीया

वाडमनःप्राणस्वरूपम् Summary and Translation in Hindi

पाठ-परिचय - प्रस्तुत पाठ छान्दोग्योपनिषद् के छठे अध्याय के पञ्चम खण्ड पर आधारित है। इसमें मन, प्राण तथा वाक् (वाणी) के संदर्भ में रोचक विवरण प्रस्तुत किया गया है। उपनिषद् के गूढ़ प्रसंग को बोधगम्य बनाने के उद्देश्य से इसे आरुणि एवं श्वेतकेतु के संवादरूप में प्रस्तुत किया गया है। आर्ष-परम्परा में ज्ञान-प्राप्ति के तीन उपाय बताए गए हैं जिनमें परिप्रश्न भी एक है। यहाँ गुरुसेवापरायण शिष्य वाणी, मन तथा प्राण के विषय में प्रश्न पूछता है और आचार्य उन प्रश्नों के समुचित उत्तर प्रदान कर उसकी जिज्ञासा का समाधान करता है।